ISBN: 978-81-974088-0-9

7. वर्तमान समाज और साहित्य में विकलांगता का अध्ययन

नयना पहाड़िया

सहायक प्राध्यापक,
सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय,
नवापारा (राजिम).

विकलांगता का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव जाति का इतिहास। मानव जीवन के साथ विकलांगता का संबंध किसी न किसी रूप से जुड़ा हुआ है। हर युग में विकलांगता का अस्तित्व रहा है। किसी भी समय में किसी स्थान के सभी मनुष्य पूर्णतः स्वस्थ या संकलांग नहीं हो सकते। दरअसलः सकलांगता तथा विकलांगता सापेक्षिक शब्दावली है। कोई भी व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ नहीं हो सकता भले ही वह बाह्य दृष्टि से कितना ही स्वस्थ क्यों न दिखाई दे।

साहित्य के दोनो ही रूपों में विकलांगो का चित्रण नकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों ही रूपों में किया गया है। साहित्यकार विकलांगता का चित्रण उपहासात्मक ढंग से प्रवृत्त होकर करते है। मानो शारीरिक सुंदरता आत्मा की सुंदरता से जुड़ी होती है। तथा विकलांगता या वक्रता शारीरिक कुरूपता से जुड़ी होती है। सक्षमता तथा विकलांग लोगों के दिलों–दिमाग में इस तरह बैठ जाता है, जैसे विकलांगता तथा शारीरिक पूर्णता में विरोधा भाषी संबंध हो।

1970 के बाद द्शकों में विकलांगों के प्रति सामाजिक अवधारणा में महत्वपूर्ण एव क्रांतिकारी परिवर्तन शुरू हुआ। पहले जहाँ विकलांगता को दैवीय प्रकोप, पूर्वजन्म का फल मानकर विकलांगों को घृणा की महासभा के द्वारा 1975 में विकलांगों के अधिकारों से संबंधित घोषणा पत्र को पारित किया जाना ।

बीज शब्द : विकलांगता, समाज, शिक्षा, व्यक्ति, जीवन, स्थिति, लोग, पूर्वजन्म, विकास।

प्रस्तावनाः

समाज में विकलांगता को अलग–अलग तरीके से देखा जाता है। अधिकांश देशों में विकलांगता को मानव जीवन का हिस्सा माना जाता है। ऐसे समाज में ऐसी व्यवस्थाएँकी जाती है। कि

एक विकलांग व्यक्ति भी रोजमर्रा की हर गतिविधियों में हिस्सा ले सके। और आत्मनिर्भर बन सके। इन पर अमूमन लोग यह मानते है। कि स्थाई या अस्थाई रूप से हर व्यक्ति अपने जीवन में विकलांगता को कभी न कभी महसूस करता है। यही कारण है कि यहाँ विकलांगता को एक सामान्य प्राकृतिक घटना की तरह देखा जाता है।

गैर विकसित और कम पढ़े लिखे समाज में विकलांगता को विकलांग व्यक्ति की निजी समस्या के रूप में देखा जाता है। विकलांगता को अक्सर पूर्व जन्म के बुरे कर्मो से भी जोड़ दिया जाता। ऐसी जगहों पर विकलांगजनों के पास कोई विशेषाधिकार भी नहीं होते। इस संबंध में मेरियम वेबस्टर ने कहा है। कि

विकलांगता एक शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक या विकासात्मक स्थिति है। जो किसी भी व्यक्ति के किसी सामान्य दैनिक जीवन से जुड़े कार्य, बातचीत या गतिविधि को करने या उनमें शामिल होने की क्षमता को बाधित या सीमित करती है।

अध्ययन का उददे्श्यः

1. विकलांग व्यक्तियों के अध्ययन का हमारा मुख्य उददे्श्य उन्हें आत्मनिर्भर बनाना।
2. विकलांग व्यक्तियों के अध्ययन का मुख्य उददे्श्य उनके साथ हो रहे विसंगति और दुर्व्यवहार की ओर प्रकाश डालना।
3. विकलांग व्यक्तियों में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाना जिससे कि वे समाज में सम्मान के साथ जी सके।

सैद्वांतिक आधारः

विकलांगों के संदर्भ में कुछ शोध एवं लेखों का अध्ययन किया गया है। जिसकी सहायता से विश्व के संबंध में कुछ सैद्वांतिक आधार लेने का प्रयास करता है। यह सैद्वांतिक आधार विकलांगता और महिला विकलांगता के संदर्भ में है। विकलांगता को समझने के लिए विभिन्न अध्ययन शस्त्रों का सहारा लिया है। जिसमें Plouse T Jaeger Sinthia and Bowman पुस्तक (2005)है, इस पुस्तक के भूमिका वाले अध्याय में लेखक ने विकलांगता को बहु आयामी

ढंग से समझने का प्रयास किया है। लेखक कके अनुसार शारीरिक रूप से विकलांग अथवा अक्षम व्यक्ति अनुकूल परिस्थितियों जैसे ढांचागत सुविधा प्राप्त वातावरण में स्वयं सशक्त अथवा सक्षम महसूस करेगा वही प्रतिकूल सामाजिक ढाँचे में शारीरिक रूप से सक्षम भी विकलांगता संदर्भगत परिस्थितियों में पनपती है यह पुस्तक विकलांगता को एक सामाजिक अवधारण मानने पर जोर देती है।

डॉ संगीता परमानंद ने विकलांगता को समाजशास्त्रीय अध्ययन का विषय बनाकर और छत्तीसगढ़ राज्य की न्याय और संस्कारधानी बिलासपुर जिले को केन्द्रस्थ करके जो अध्ययन अन्वेषण किया है वह अन्य राज्यों के लिए भी आदर्श प्रस्तुत करेगा।

विकलांगों की स्थिति:

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में दिव्यांग लोगों की संख्या 2.68 करोड़ (या जनसंख्या 2-2 प्रतिशत) के करीब है। भारत में महिलाओं की तुलना में पुरूषो का एक उच्च अनुपात विकलांग था, और शहरी क्षेत्रों की तुलना ग्रामीण क्षेत्रों में विकलांगता अधिक प्रचलित थी। सहायता के बिना चलने–फिरने में असमर्थता सबसे आम विकलांगता थी। महिलाओं की तुलना में अधिक पुरूषों ने विकलांगता का अनुभव किया।

विकलांग व्यक्तियों के कल्याण की व्यवस्था करने में भारतीय शिक्षा प्रणाली और सरकारी संस्थान दोनों ही एक हद तक असफल हो रहे है। बेहतर समाज के निर्माण के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार होना अतिआवश्यक हो गया जिससे दिव्यांग व्यक्ति साहस और विवेक के साथ जीवन की चुनौतियों का सामनना करने हुए विकलांग व्यक्ति आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ सके। निरक्षरता दिव्यांग व्यक्तियों के बीच विरोघ रूप से प्रचलित है और उनके लिए दोहरा नुकसान है निरक्षर होने के कारण वे निरक्षरता के कारण अलग–अलग पड़ जाते है।

विकलांगों का अस्तित्व:

आज भी विकलांगों को अपने अस्तित्व के लिए लड़ना पड़ता है। क्योंकि समाज में आज भी उन्हें वो सम्मान नहीं मिलता है जिसके वो हकदार है। आज भी विकलांगों के साथ अमानवीय और दुर्व्यवहार किा जाता है। आज देखा जाये तो पहले के अपेक्षा समाज आज अधिक शिक्षित

हो गया है। फिर भी विकलांगों की स्थिति आज भी वही का वही है। वर्तमान में देखा जाये तो सरकारी और विभिन्न संस्थानों द्वारा विकलांगों के हित के लिए विभिन्न योजनाएँ चलाई जा रही है जिसे विकलांग लोगों तक पहुँचाया जाये। किन्तु जो विकलां लोग रहते है। उन्हें उन सुविधाओं और योजनाओं का उचित लाभ नहीं मिल पाता है। जिसके कारण विकलांगों को अपने अस्तित्व के लिए हमेशा लड़ना पड़ता है।

उन्हें शिक्षित व कुशल करके समाज अवसर उपलब्ध करवाकर राष्ट्रीय संस्थानों की आय के रूप में सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। हमारे देश में विकलांगों की इतनी बड़ी आबादी के बावजूद लोग आज तक उनके अधिकारों के बारे में जानते तक नहीं है। हमारा सभ्य समाज उन्हें केवल भीख और चंदा देकर ही अपने कर्तव्यों से मुक्त हो जाता है। जबकि उनकी आवश्यकता दया व सहानुभूति का पात्र बनने की नहीं अपितु उन्हें सक्षम वह अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करके अधिकार संपन्नता हासिल करने से है।

विकलांगों का विभिन्न क्षेत्रों में योगदानः :

विकलांगता जीवन का अभिशाप नहीं चुनौती है, प्रकृति का प्रकोप , नहीं संघर्ष की शक्ति क्षमता और जिजीविषा की जाँच है। किसी एक अंग के विकल होने से दूसरे किसी अंग की प्रपूर्ति स्वरूप क्रियाशील होने की वैज्ञानिकता ईश्वर या प्रकृति के कारण वरदान बन जाती है। इसी आधार पर देश के ऊर्जावान और ज्ञानवान प्रधानमंत्री मानवीय श्री नरेन्द्र मोदी जी 'विकलांग' के स्थान पर 'दिव्यांग' का सार्थक प्रयोग करते है। विकलांगता आपके जीवन की कठिनता को बढ़ा देती है। फिर भी ऐसे लोग है जो विकलांगता को अपनी उपलब्धियों के रास्ते में अड़चन नहीं बनने देते आत्म विश्वास की उनकी सबसे बड़ी ताकत होती है। और उनकी हिम्मत उन्हें सफलता और शोहरत तक पहुँचती है। मैं यहाँ कुछ ऐसे विकलांगों को पेश कर रहीं हूँ ऐसे ही कुछ प्रसिद्व भारतीय विकलांग व्यक्तियों की सूची जिन्होने विकलांगता के बावजूद बड़ी सफलताएँ हासिल की है जिनका नाम इस प्रकार है।

1. **इरा सिंघल** : इरा सिंघल एक आई.ए. एस अधिकारी है जिन्होने साल 2014 में
2. पूरे देश में पहला स्थान प्राप्त किया था। इनका जन्म 31 अगस्त 1983 में मेरठ में हुआ था कप्यूटर साइंस से स्नातक करने के बाद इन्होंने फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज

दिल्ली विश्वविद्यालयय से मार्केटिग और फाइनेंस में एम.बी. ए. की दोहरी डिग्री हासिल की थी।

3. **ललित कुमार** : सम्यक ललित के नाम से भी जाने जाते है। आप विकलांगता विषयों से जुड़ा दशमलव नामक एक यूटयूब चैनत चलाते है। जिस पर 2,10,000 से अधिक दर्शक है। भारत में विकलांग व्यक्तियों के बीच ललित की अच्छी पहचान है वे ईवारा फांऊडेशन के अध्यक्ष है। और एक प्रसिद्व विकलांगता अधिकार कार्यकर्ता है। ललित ने अपने जीवन के आधार पर विटामिन जिन्दगी नाम से एक पुस्तक लिखी है जो हिन्दी में अब तक लिखी गई बेहतरीन प्रेरणादायक किताबों में से एक है। वे एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता हैं।
4. **ज्योति आम्गे** : दुनिया की सबसे छोटी जीवित महिला के रूप में ज्योति के नाम एक विश्व कीर्तिमान है वे कई बार टी.वी. कार्यक्रमों में आ चुकी है। उनका बौनापन एक अनुवांशिक बीमारी एकौनड्राप्ले जिया के कारण है।
5. **डॉ. सुरेश एच. आडवानी** : डॉ. सुरेश एच. आडवानी भारत के एक प्रतिष्ठित कैसर विशेषज्ञ है। जिन्हे भारत में हेमेटोपाएटिक स्टेयसेल प्रत्यारोपण आरम्भ करने को श्रेय दिया जाता है। पद्य भूषण से सम्मानित डॉ. सुरेश एच. आडवानी को आठ वर्ष की उम्र में पोलियों हुआ था। इन्होने मुंबई के ग्रोट मेडिकल कालेज से एम.बी.बी. एस और एम.डी की डिग्री हासिल की। इन्हें मेडिकल काउसिल ऑफ इण्डिया (2005) द्वारा डॉ. बी.सी. रॉय राष्ट्रीय पुरस्कार से भी पुरस्कृत किया गया।
6. **भरत कुमार** : भरत एक पैरा–तैराक है जिन्होने दो अंतरराष्ट्रीय खिताब और 50 से अधिक पदक जीते है। इन्होने इग्लैण्ड, आयर लैण्ड, डालैण्ड, मलेशिया और चीन जैसे देशों में प्रतियोगिताओं में भाग लिया है। भरत एक मजदूर पिता के घर पैदा हुए। गरीबी और विकलांगता दोनों के साथ जीवन जीते हुए उन्होंने अपनी उपलब्धियों से एक अलग जगह बनायी है।

निष्कर्ष :

विकलांकता को समाज में एक सामाजिक कलंग माना जाता है। जिसे सुधारने की आवश्यकता है। जिन क्षेत्रों में उनका ध्याान रखा गया है, वहाँ उन्होंने अपनी ताकत साबित की है। और

ऊँचाईयों तक पहुँचाया है और समाज में उच्चतम अंक हासिल किये है। दिव्यांग व्यक्ति जिन्होंने अपना लक्ष्य बना लिा है और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने लिए कड़ी मेहनत की है, आज सफल है। और सरकार के साथ–साथ निजी संगठनों में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों की अध्यक्षता कर रहे है। दिव्यांग आबादी भारत में बड़ी संख्या में है और इनदेखा नहीं किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. गौतम, अखिलेश कुमारः जेंडर और विकलांगता ,International Research Journal of Manament Sociology & Humanities, Vol No.8 Issue1(2017) Page. 74-75
2. परमानंद, डॉ. संगीता – विकलांगता का समाजशास्त्रीय अध्ययनः पेज. न.76
3. राजकीय,डॉ सुनील थुआ– विकलांगता का समाजशास्त्र
4. विकलांगता डॉट. काम
5. www.lalitkumar.in
6. https://viklangta.com
4. Dristiias.com